प्रातः क्लास 10/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

कई बच्चे कहते हैं बाबा हमको याद नहीं पड़ता है। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं कि अपने घर को याद करो। उनको कहा जाता है टॉवर ऑफ सायलेंस। टावर कहा जाता है जो बहुत ऊँच होता है। तो वह है टावर ऑफ सायलेंस। टावर ऑफ सुख। तुम यहाँ बैठे, तो तुम्हारी बद्धि जानी चाहिए घर तरफ। वह है शांति का टावर। ऊँच ते ऊँच को टावर कहा जाता है। तुम शांति के टावर हो। वहाँ जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। टावर में कैसे जाते हो, वह टावर में रहने वाला बाप बैठ शिक्षा देते हैं कि मुझे याद करो। उनको घर, मुक्तिधाम, शांतिधाम भी कहा जाता है। यह बातें कोई जंगली जानवर नहीं जानते। बच्चों को समझाया गया है तुम अपने सुखधाम, शांतिधाम को याद करो। नहीं याद कर सकते हो, वहाँ नहीं रहते हो तो जैसी जंगली काँटे हो। इसलिए दुःख भी भास्ता है। अगर समझे हम आत्मा शांतिधाम के निवासी हैं; क्योंकि वह है घर। बाप का घर है ना। तुम हो बच्चे। ऐसी-2 सहज बातें भी माया भुला देती है। हूबहू तुम जंगली होने कारण अशांति दुःख आदि सभी भासता है। बाप कहते हैं बच्चे अपने घर को याद करो और राजाई को याद करो। एमऑबजेक्ट सामने खड़ी है। स्कूल में जो पढ़ते हैं तो पढ़ाने वाले भी याद रहते हैं और एमऑबजेक्ट भी याद रहती है। तुम इतना भी याद नहीं करते हो? शांतिधाम-सुखधाम को ही याद करते हो। यहाँ तुमको यह आदत डाली जाती है कि चलते-फिरते अपन को आत्मा समझो। शांतिधाम-सुखधाम को याद करो। वहाँ मिलता भी है सुख और शांति। तो अपने घर को और सुखधाम को याद करो। वह है सुख का घाट। यह है दुःख का घाट। इतनी सहज बात भी तुम याद नहीं कर सकते हो? यहाँ बैठे भी तुमको बाहर की बातें याद आ जाती है। घड़ी-2 तो नहीं बैठ कहेंगे कि शांतिधाम सुखधाम को याद करो। है तो वही गीता। भगवानुवाच भी है। भगवान तो ज़रूर स्वर्ग का मालिक बनावेंगे। जबकि स्वर्ग का मालिक बनाने वाला बाप बैठा है तो घर को, स्वर्ग को याद करना है। तो अंत मते सो गति हो जावेगी। कहते भी हैं ईश्वर की गत मत न्यारी। अर्थात् गति-सद्गति के लिए वह जो मत देते हैं वह सारी दुनिया से न्या(र)ी है। कितने ढेर गुरु हैं। बाप ने समझाया है कोई भी धर्म स्थापक को गुरु नहीं कहा जाता। गुरु वापस ले जाने वाले को कहा जाता है। वह वापस तो ले जा नहीं सकते। वानप्रस्थ वा निर्वाणधाम जाने लिए गुरु किया जाता है; परंतु कोई भी ले जा नहीं सकते। इसलिए वानप्रस्थी कोई है नहीं। वानप्रस्थ अर्थात् वाणी से परे, वह तो है शांतिधाम। घर। वानप्रस्थ का अर्थ न गुरु लोग, न उन्हों के फॉलोवर्स जानते हैं। इसलिए कहा जाता है गुरु जिनके अंधला चेला सत्यानाश। सभी की सत्यानाश है, भ्रष्टाचारी है ना। श्रेष्टाचारी देवताओं के चित्र हैं। चित्र लोप नहीं होते हैं। इन चित्रों से ही समझाया जाता है। इसमें भी बच्चों को समझाया जाता है यह चित्र हैं सतयुग के। यह चित्र हैं त्रेता के। रामचंद्र त्रेता का है ना। इनको भी भगवान नहीं कहा जा सकता। ल॰ना॰ को भी भगवान-भगवती नहीं कहा जा सकता। गाया जाता है आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही है। सिवाय देवी-देवताओं के कोई भी स्थाई पवित्र नहीं होते। तुम 21 जन्म स्थाई पवित्र रहते हो। फिर आस्ते-2 सुख कम हो जाता है। त्रेता को कहेंगे सेमी; क्योंकि दो कला कम होती है। अभी तुम बच्चों को बाप और सृष्टिचक्र का परिचय मिला है। उनको ही याद करना है। तुम्हारी बुद्धि पता नहीं कहाँ-2 चली जाती है। यह तो याद रखो ना। आस्तिक बनकर तो बैठो। बाप और रचना के आदि-मध्य-अंत को तुम जानते हो। उस झाड़ का आदि-मध्य-अंत नहीं कहा जाता। उनका सिर्फ आदि और अंत होता है। इनका तो तुमको आदि-मध्य-अंत का समझाया जाता है। मध्य में रावण राज्य शुरू होता है। अर्थात् काँटा बनने शुरू होते हैं। जो फूलों का बगीचा है वह जंगल बनना शुरू होता है। इस समय तो जड़-जड़ीभूत अवस्था, तमोप्रधान है। अभी फिर फूलों के बगीचा का कलम लगता है। नहीं तो फिर प्रलय हो जाये। प्रलय अर्थात् जलमई तो होती नहीं। भारत तो फिर भी रह जाता। बच्चे जानते हैं चारों तरफ जलमई हो जाती है बाकी एक भारत जाकर रहता है। जैसे पानी के बीच चढ़ते हैं और फिर उतरते हैं। यह भी जैसे वीर चढ़ती है। फिर जब खत्म हो जाता है तो

वीर उतरती जाती है। तुमको बहुत लोग उलाहना देते हैं कि तुम ब्रह्माकुमारियाँ सिर्फ मौत-2 ही कहती रहती हो। कुछ शुभ तो बोलो। सात वर्ष में मौत होगा, आठ वर्ष में मौत होगा। मौत की ही बात सुनाते रहते हैं। हम तो कहते हैं पवित्रता सुख-शांति का राज्य स्थापन होता है। गुप्त वेश में यह स्वर्ग की स्थापना हो रही है। इतने ढेर मनुष्य जब वापस जावेंगे तब तो सुख-शांति स्थापन होगी ना। हम तो शुभ बोलते हैं। बाप को ही कहते हैं बाबा आओ। हमको पवित्र बनाकर ले जाओ। तो तुम शुद्ध बोलते हो। दुख की दुनिया से हमको ले चलो सुखधाम-शांतिधाम। यानी अपवित्रता का विनाश करो, पावन दुनिया की स्थापना करो। विश्व में शांति करो। वह तो सतयुग में ही होते हैं ना। यह तो विनाश नहीं, यह तो विश्व में शांति स्थापन हो रही है; परंतु जब तुम किसको समझाओ नहीं तब तक समझ थोड़े ही सकेंगे। मनुष्य शांति माँगते हैं यानी मौत माँगते हैं। वह तो कोई दे न सके। बाप को ही कालों का काल कहा जाता है। सभी को मौत दे देते हैं। कितने को मौत देते हैं। सतयुग में बहुत थोड़े होते हैं। बाकी सभी को मौत। बुलाते भी हैं हे पतित-पावन आओ। पावन दुनिया में ले चलो। तो पुरानी दुनिया का ज़रूर मौत होगा ना। पुरानी दुनिया में पावन कैसे होंगे? मनुष्य पतित दुनिया और पावन दुनिया का अर्थ नहीं समझते हैं। पावन दुनिया में बहुत थोड़े मनुष्य और शांत रहते हैं। यह समझना, समझाना कितना सहज है। फिर भी किसकी बुद्धि में नहीं बैठता। यह भी ड्रामा अनुसार कहेंगे, सभी की बुद्धि में नहीं बैठती, नहीं बैठना है। कदाचित नहीं बैठना है, तब तो कहा जाता है कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े हैं। वह कब नहीं सुनेंगे। कब नहीं जागेंगे, कब नहीं जागेंगे। ड्रामा बड़ा विचित्र है। यह सारा चक्र तुम बच्चों की बुद्धि में फिर चाहिए। बाप ही नॉलेज देते हैं। वही नॉलेजफुल है। ज्ञान का सागर एक ही होता है। तुमको मालूम है सागर कितने होते हैं? नाम तो बहुत हैं ना। हरेक हिस्सा का अलग-2 नाम रख दिया है। सागर तो एक ही है ना। फिर खण्डों का अलग-2 टुकड़ा-2 कर दिया है। धरती भी एक ही है। टुकड़ा-2 हुये पड़े हैं। जब इन ल॰ना॰ का राज्य था तो धरती भी एक थी। राज्य भी एक था। सारी धरती, सारा सागर, सारा आसमान तुम्हारा था। तुम्हारा ही राज्य होता है। शांतिधाम में तो सभी जावेंगे; परंतु जीवनमुक्ति में जाना कोई मासी का घर नहीं है। वह तो कॉमन बात है। सुबह घर ज़रूर लौटेंगे। बाकी नई दुनिया में सभी थोड़े ही जावेंगे। नई दुनिया में है ही तुम्हारा राज्य। फिर भी कई तो बहुत देरी से आते हैं। पुरानी दुनिया शुरू होने से थोड़ा वलहे(पहले)। वह क्या हुआ? अच्छी तरह नहीं पढ़ते हैं तो बाकी थोड़ा सुख पावेंगे। 16 कला तो है नहीं। 14 कला के भी पिछाड़ी में आते हैं। उनके सामने तो जैसे दुःख की दुनिया ही देखने में आती है। वहाँ भल कुछ मालूम नहीं पड़ता है, यह नॉलेज अभी तुम्हारे बुद्धि में है। द्वापर से लेकर कलियुग तक पीछे पैसा कमाते-2 इस समय तो देखो पैसे कितने हो गये हैं। कितने बड़े महल बनते हैं। कितनी माड़ियाँ बनाते हैं। सतयुग में ऐसी माड़ियाँ थोड़े ही होती है। सतयुग-त्रेता में यह माड़ियाँ आदि होती ही नहीं। द्वापर में नहीं होते। यह तो कलियुग में आकर इतने मार वाले मकान आदि बनाते हैं; क्योंकि बहुत मनुष्य हो जाते हैं ना। वृद्धि होती जाती है। इतने मनुष्य रहे कहाँ? जहाँ धंधा आदि बहुत हैं वहाँ बड़े-2 मकान बनते हैं। जंगल से मंगल हो जाता है। मकान बनते जाते हैं। 80वर्ष में बम्बई देखो क्या से क्या हो गया है! कितने मनुष्य हो गये हैं! समुद्र को बैठ सुखाया है। पानी कम हो जाती है, मनुष्य वृद्धि को पाते हैं। तो पानी कहाँ से आवेगा? समुद्र से। कितना ढेर पानी खपता है। फिर पानी चढ़ जावेगा तो यह सभी खंड खत्म हो जावेंगे। सिर्फ सागर द्वारा खत्म नहीं होती है। पहाड़ भी फटते हैं तो आजू-बाजू सभी कुछ जला देते हैं। वण्डर है ना। बड़ा ज़ोर से फटते हैं। आग निकलते हैं। यह सभी आपदाएँ आने वाली हैं। इसलिए बाप कहते है अभी जल्दी-2 तैयार होते रहो। विनाश के आगे तैयार होना है। बाप आये ही हैं विनाश के लिए। देखेंगे पूरी आग लगी है तो फिर चले जावेंगे। बाप सभी को साथ भी ले जावेंगे। यह होना भी ज़रूर है; परंतु इन बिचारों को शास्त्र सुनाने वालों ने समय का गपोड़ा बना दिया है। अभी तुम जानते हो यह तो वही गीता एपिसोड है जिसमें देवी-देवताओं का राज्य स्थापन होता

है। और सभी धर्म विनाश हो जाते हैं। भगवान की गाई हुई है एक गीता। बाकी तो जो कुछ पढ़ते रहते हैं पुरानी कथाएँ हैं। ऐसी-2 बातें धारण कर फिर सुनानी चाहिए। कई कहते हैं हमको धारणा नहीं होती है। सो भी बाबा कहते हम इसमें क्या करें। राजधानी स्थापन होती है इसमें तो सभी चाहिए ना। बाप में इतनी ताकत हो कृपा करने की फिर तो सभी को ऊँच बना दे; परंतु नहीं। राजधानी नम्बरवार ही बननी है। यह तो कोई भी समझेंगे शिवबाबा भगवान आये हैं तो ज़रूर नई दुनिया की सौगात ही ले आवेंगे। बाप ज़रूर नई दुनिया स्थापन अर्थ ही आवेंगे और संगमयुग पर ही आवेंगे नई दुनिया की स्थापना करने। जिनको निश्चय ही नहीं उनसे भल कितना भी माथा आदि मारो कभी सुधरेंगे नहीं। बाप के पधारामणी का पैगाम तो ज़रूर देना है। आगे चल अखबारों में भी ज़ोर से पड़ेगा। जैसे अखबारों द्वारा नाम बदनाम हुआ है, फिर नाम बाला भी अखबारों द्वारा होगा। सभी अखबारों, जो भी भाषाएँ वाले हैं, सभी में तुम्हारा नाम निकलेगा। ऐसे मत समझो हमको कहाँ जाना पड़ेगा। नहीं। अखबारों की सर्विस होनी है। उन द्वारा ही सुनेंगे भगवानुवाच मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। गीता में भी है ना। अखबारों में तो पड़ना ही है। जब नाम बाला होगा तो फिर पड़ता ही रहेगा। जैसे कल्प पहले पड़ा होगा। सभी को मैसेज़ मिल जावेगा। यह सभी इसके लिए ही युक्तियाँ चल रही हैं। किसकी बुद्धि में बैठ गया तो झट डालने लग पड़ेंगे। सभी धर्म वालों को मालूम पड़ जावेगा, तब तो गायन है ना अहो प्रभु तेरी लीला..... बाप की याद तो सभी को आवेगी; परंतु कुछ भी कर नहीं सकते। अहो प्रभु आपकी लीला अर्थात् खेल। सभी अखबारों में पड़ जावेगा। जहाँ-तहाँ अखबारों द्वारा ही मालूम पड़ जाता है। विनाश का समय भी आना है। ड्रामा के प्लैन अनुसार जैसे कल्प पहले मालूम पड़ा है अभी भी पड़ेगा। आगे चल देखना अखबार वाले कितनी तुम्हारी सर्विस करते हैं। धीरे-2 स्थापना होनी है। सिर्फ पुरुषोत्तम संगमयुग को ही तुम बच्चे याद करो। संगम के बाद है सतयुग। संगम याद आवेगा तो स्वर्ग भी याद पड़ेगा। यह याद करो तो भी बेड़ा पार है। हम विश्व के मालिक बनते हैं। ड्रामा में यह सभी नूँध है। विन(ाश) भी बड़ा अच्छा है। वह तो डरते हैं; परंतु विश्व में शांति कैसे स्थापन हो सकती जब तक कि विनाश न हो। विनाश का कड़ा नाम सुनकर मनुष्य डरते हैं। है विनाश में स्थापना। स्थापना में विनाश। शिवबाबा को हाथ तो नहीं है ना। (ब्रह्माबाबा के) हाथ काम में लाते हैं। कहते हैं तुम्हारे लिए तीरी पर बहिष्त लाया हूँ हे बच्चो! तुम भी समझते हो बाबा ने हमारे लिए सौगात लाई है। फिर हम पुनर्जन्म भी स्वर्ग में लेंगे। वहाँ तो सुख ही सुख है। यहाँ तो है ही नर्क तो पुनर्जन्म भी नर्क में ही लेते हैं। अभी तुम समझते हो यह तो बरोबर राइट बात है। वहाँ तुम स्वर्ग में होंगे तो पुनर्जन्म भी स्वर्ग में ही लेंगे। पावन दुनिया में अनेक सुख है। एक बाप ही सभी बेहद के बच्चों के सौगात लाते हैं। तुम छोड़ो न छोड़ो बाप सौगात ज़रूर लाते हैं। उनको तो आकर प(ार्ट) बजाना ही है। वण्डर तो यह है ना। इतनी छोटी आत्मा है, उनमें सारा पार्ट नूँधा हुआ है। रात-दिन फर्क है। कहते भी हैं भृकुटि के बीच में चमकता है अजब सितारा। आत्मा को सितारा कहते हैं। यह तो है रथ अकाल मूर्त, जिसको काल नहीं खाता है। यह तो साकार मूर्त है जिसको काल खाता है। झाड़ पहले छोटा होता है। फिर पुराने पत्ते छनते जाते हैं। नये निकलते जाते हैं। झाड़ वृद्धि को पाता जाता है। जो छनते हैं व(ह) फिर जन्म लेते रहते हैं। जो मरते हैं वह आकर जन्म लेते हैं। बाबा छनते-2 (84 जन्म लेते) देखो झाड़ के अंत आकर खड़ा हुआ है। फिर ऊपर में भी खड़ा है। दोनों जगह खड़े हैं। शुरू में है नारायण। पिछाड़ी में है ब्रह्मा। ब्रह्मा सो जाकर नारायण बनते हैं। तत त्वम्। यह तो बुद्धि में बैठना चाहिए ना। दोनों का खेल है। वह रात (का) ब्रह्मा, वह दिन का नारायण। ब्राह्मणों की है रात। देवताओं का है दिन। तुम हो संगमयुगी। वह है सतयुगी। कलियुग सो संगमयुग सो फिर सतयुग बनना है। कितना अच्छा समझाते हैं। दिन और रात के बीच का है पुरुषोत्तम संगमयुग। अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। नमस्ते।

विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?